International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वागड़ का भील राजा बांसिया भील एवं बांसवाड़ा नगर

शोधार्थी

कन्हैया लाल खांट

इतिहास

गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय

बांसवाड़ा (राज.)

अनेकता में एकता ही भारतीय संस्कृति है उस अनेकता के मूल में निश्चित रूप से भारत के विभिन्न प्रदेशों में बसी जनजातियाँ है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 में अनुसूचित जनजातियों की सूचियों में दर्ज की गई। जिसमें प्रमुख भील, संथाल, गौड़, उंराव, मीणा, गरासिया, गारो, खांसी, मिजो इत्यादि। इन जनजातियों में सबसे प्राचीन जनजाति भील है जो भारत के पश्चिम और मध्य में निवासरत है व इनके प्रमुख राज्य राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और दमण द्वीप में बहुसंख्यक है यह भील जनजाति प्राचीन काल से अरावली पर्वत माला और विध्यांचल पर्वतमाला की भील पहाड़ियो में कठिन परिस्थितियों में रहती है। राजस्थान की प्रमुख जनजातियों भील, मीणा, गरासिया, सहरिया और कथौड़ी प्रमुख है।

राजस्थान के अरावली पर्वतमाला के पश्चिम–दक्षिणी पहाड़ियो पर निवास करने वाली जनजाति भील है जिससे उन पहाड़ियों को भील पहाडियां कहा जाता है । राजस्थान के जिले बांसवाड़ा–डूंगरपुर प्रतापगढ़, उदयपुर, सिरोही, भीलवाड़ा चित्तोड़गढ में भील समुदाय की आबादी छितराई हुई है। जिससे यह क्षेत्र भील बाहुल्य क्षेत्र है, यहां के भील आदिवासी अत्यन्त परम्परावादी और क्षत्रिय जाति से सम्बन्ध रहा है ।

भीलों की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न प्रकार के मत एवं किवदन्तियाँ प्रचलित है एक देवो के देव महादेव की संतान भील है जो आज भी भीली पहाड़ियो में विराजमान ''शिवालय'' में शिवलिंग करे अर्पण ''भिल्व पत्र'' अर्पण किये जाते है। कुछ विद्वानों के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुसार भील शब्द ''भिल्वा'' शब्द से हुई मानते है । तमिल कवियों ने उत्तर भारत में रहने वाले आदिवासीयों को ''विल्लूवार'' शब्द से सम्बोधित किया है जिसका सम्बन्ध धनुष धारी भील आदिवासी समुदाय से है। बाणभट्ट कृत कादम्बरी के अनुसार 'भील' शब्द का उपयोग अपभ्रंश साहित्य और प्राचीन संस्कृत में भी मिलता है साथ ही सोमदेव कृत कथा सरित्सागर में 'भील' शब्द का उपयोग समुदाय के लिये सर्वप्रथम उल्लेख माना जाता है।

लेकिन भील समुदाय का उल्लेख वालमाकृत भारतीय महाकाव्य–रामायण में चित्रकूट राजा निषादराज एवं भील राजा शबरा के पुत्री शबरी का मातंग ऋषि के आश्रम में रह कर ज्ञान अर्जित किया जिसे भील समाज माता शबरी कह कर पूजता है और भगवान राम के वनवास के समय राम और लक्ष्मण को बेर फल खिलाने का उल्लेख मिलता है। उसके आगे किष्किन्धा जंगल के राजा बालि, सुग्रीव और मंत्री हनुमान को भी भील वंशज मानते है और उनकी पूजा–अर्चना करते है।

महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत में भी निषादराज भील एकलव्य की गुरू द्रोणाचार्य से धर्नुधर शिक्षा सीखने का प्रसंग आता है जिसमें गुरू अपने कर्तव्य से बन्धे होने से शिष्य बनाने से मना करने पर भी गुरू द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर धर्नुधर विद्या से प्रवीण हुए थे भोल एकलव्य।

इस प्रकार भील समुदाय के लोग प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक भारत के समय में साहस, शौर्य, वीरता और क्षत्रिय गुणों से परिपूर्ण रहे है। भील जनजाति का प्रतीक चिन्ह ''तीर–कमान'' है।

कर्नल जेम्स टॉड ने इन्हे वनपुत्र कहा है। साथ ही उनका ग्रन्थ ''एनाल्स एण्ड एनटोक्यूटीज ऑफ राजस्थान में भील समुदाय के इतिहास की एक दन्तकथा का उल्लेख किया है इसके अनुसार छठी सदी में गोहा (गुहिल) जो मेवाड के गुहिल राजवंश का संस्थापक था, अपने बाल्यकाल में भीलों के मध्य रहकर बडा हुआ। इस दौरान वह ईडर (गुजरात) के भील राजा मण्डलिका के संरक्षण में रहा । वह भीलों के संगंत रहकर बड़ा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

साहसी बन गया। बाद में ईडर के भील राजा ने उसे कुछ गांव, जंगल एवं पहाड प्रदान किये। उस क्षेत्र के भीलों ने खेल–खेल में राजा चुनने का निर्णय लिया एवं भीलो ने अपनी पसंद गोहा को चुना एवं एक नौजवान भील ने अपनी अंगुली से खून निकाल कर उसके माथे पर राज तिलक का टीका लगा दिया। ''[1]

राजस्थान के दक्षिणांचल पहाड़ियों में बसे शहरों उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और कुशलगढ़ की नींव रखने में भील राजाओ का अमूल्य योगदान रहा है। वागड़ प्रदेश कहा जाने वाला बांसवाडा–डूंगरपुर में राजपूत रियासतवाले से पूर्व यहाँ की भील पहाड़ियों में भील आदिवासी निवास करता था और उसके राजा, गमेती और गांव मुखिया मिलकर राज करते थे।

''बांसवाड़ा कस्बे की स्थापना के विषय में मेजर के.डी. अर्सकीन ने लिखा है कि बांसवाड़ा के पहले राजपूत राजा जगमाल ने बांसिया भील राजा को मारकर 1530 ईस्वी (विक्रम संवंत 1587) में कब्जा किया यह उल्लेख भाटो की ख्यात पर लिखा गया है।''[2]

प्रारंभिक परिचय – भील पहाडियों में रहने वाली भील आदिवासी समुदाय का राजा बांसिया भील राजा बापड़ा का वंशज था, जिसके पूर्वजो का शासन मलारगढ़ और चित्तौड़गढ़ पर अधिकार किाय, जब गुहिलवंशी राजा बप्पारावल ने चित्तोड़गढ पर अधिकार किया तो भील राजाओं के वंशज अमरा चरपोटा और जड़ चरपोटा ने भील आदिवासीयों की पहाड़ियो में अपना नये क्षेत्र बांसवाड़ा जिले की ओर आये आर अमरा चरपोटा ने ''अमरथून'' गांव बसाया जबकि उसके दूसरे भाई जड चरपोटा ने पास ही पूर्व पूर्व दिशा की अरावली पहाड़ियों में ''जगमेर'' गांव बसाया। राजा अमरा चरपोटा के दो पुत्र बांसिया (बासना) और भाहिया भील चरपोटा थे।

राजा अमरा का उत्तराधिकारी बांसिया भील अमरथून के हुंनगर पहाड़ी पर महल का निर्माण कर आस पास के इलाके पर शासन किया। फिर अमरथुन के भील राजा बांसिया ने माही नदी के दक्षिण छोर के वर्तमान कागदी नदी के तट की पहाड़ियो तक अपने राज्य का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विस्तार किया जहाँ अमरथून से अपनी राजधानी–बांसवाड़ा नामक ग्राम की नींव 14 जनवरी 1515 ईस्वी (विक्रम संवत 1572) को मकर संक्रान्ति के दिन रखी जिसमें क्षेत्र के लोगो को तिल पपड़ी खिलाकर जश्न मनाया गया। जिसको आस पास गांवो के लोग वाहवरू और ऊहवारू भी कहते है। उन्होने माही नदी के तट पर एक आर पांचलवा की भी नींव रखो।''[3]

राजा बांसिया भील की दो रानियों थी हमाई और हंगवाई जिनका बांसवाड़ा से 2 किमी दूर भीली पहाड़ी पर दो मूर्तिया स्थापित की मन्दिर स्थित है जिसे समाई–हंगवई माता मन्दिर कहा जाता है।

पड़ौसी राज्यों से संघर्ष – बांसवाड़ा राज्य के शासक भील राजा बांसिया भील का राज्य था तो पड़ौसी राज्यों पर राजपूत राजाओं का शासन का विस्तार होते हुए आपसी सीमाओं पर संघर्ष की संभावना बढ़ रही थी माही नदी के पश्चिम में डूंगरपुर रियासत पर राजा महारावल उदयसिंह का शासक थे तो पश्चिमोत्तर में मेवाड़ के शासक महाराणा सांगा (1509–1528 ईस्वी) का शासक थे । डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह कि दो राजकुमार थे पृथ्वीराज और जगमाल।

मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह(सांगा) ने भारत में पुनः हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करने की इच्छा से दिल्ली के मुगल बादशाह बाबर पर चढ़ाई की उस समय महारावल (डूंगरपुर) उदयसिंह और उसका राजकुमार जगमाल भी 12000 राजपुत भील सैनिको सहित महाराणा के अभियान में साथ रहे।

मेवाड़ के महाराणा सांगा और मुगल राजा बाबर की सेना के मध्य खानवा का युद्ध (वि.स. 1584 चौत्र सुदी 14) हुआ जिसमें महारावल उदयसिंह 17 मार्च 1527 ईस्वी को युद्ध लड़ते हुए विरगती को प्राप्त हुए इसमें राजकुमार जगमाल सिंह घायल हो गये। तब महारावल उदयसिंह के ज्येष्ठ राजकुमार पृथ्वीराज डूंगरपुर का शासक बना और छोटा भाई जगमाल सिंह घायल अवस्था में मेवाड़ की सेना से अलग होकर भील सैनिको के साथ चदेरी, उज्जैन होते हुए ईडर पहुचे। ईडर राजा राव चन्द्रभाण ने शरण दी। इसके पश्चात

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

डूंगरपुर के महारावल के ज्येष्ठ भाई पृथ्वीराज के दरबार में जगमाल सिंह पंहुचे तो उन्हे पहचानने से इन्कार कर दिया और डूंगरपुर राज्य से निष्कासित कर दिया तब कुंवर जगमाल सिंह को माही नदी पूर्वी तट की भील सरदारों ने उस सहयोग एवं आश्रय दिया ऐसा कहा जाता है कि भील राजा बांसिया ने राजकुमार जगमाल सिंह के साथ खानवा के युद्ध में भील सैनिकों के साथ मउड़ी खेड़ा गांव के भील सरकार के यहाँ आश्रय दिया ।

इसके पश्चात राजकुमार जगमाल आस पास के भील सरदारों के साथ मेहमान बनकर गावों में परिचित हुआ और जगमेर, अमरथून होता हुआ प्रतापी भील राजा बांसिया के राज्य बांसवाड़ा में मेहमान बनकर महल में रहने लगा । राजकुमार जगमाल महत्वाकांक्षी और राज्य स्थापित करने शासक बनने के लिये विक्रम संवत 1587 (इस्वी सन् 1530) में धोखे से बांसवाड़ा भील राज्य राजा बांसिया भील की हत्या कर बांसवाड़ा राज्य पर अपना अधिकार कर लिया।

सन् 1530 ईस्वी में बांसवाड़ा में भील राज्य का पतन कर महारावल शाखा को प्रथम शासक जगमाल बने। भील राजा बांसिया का संघर्ष में सिर कुशलबाग के नजदीक नींव में डाल कर। मसकरीया डेरा रखा। साथ ही उसका भाई भाहिया को भी हत्या पीपली चौक के दक्षिण में दफना दिया जहा आज भी उन्हें याद में ''भाजापालिया'' नाम से जाना जाता है। ''[4]

इस तरह पूर्वी दिशा में, उत्तरी दिशा में भील पहाड़ियों पर बसा वागड़ क्षेत्र का नगर बांसवाड़ा पर महारावल राजपूत शासको ने अधिकार में 1530 ईस्वी से भारत की आजादी तक 15 अगस्त 1947 तक शासन संचालित किया । इसका प्रथम शिलालेख (2002) में ''बांसिया चरपोटा की प्रथम मूर्ति का अनावरण बांसवाड़ा से 25 किमी दूर पांडवो की तपोभूमि भीमकुण्ड (चिबड़ा तलाई गढ़ी) में तत्कालीन उपराष्ट्रपति भारत सरकार श्रीमान भैरोसिंह शेखावत के कर कमलो द्वारा चौत्र सुदी रामनवमी वि.स. 2060 (ई.स. 2002 तारीख 11 अप्रेल को गई। जिसका प्रथम पंक्ति है वागड़ प्रदेश में भील राजा बांसिया भील चरपोटा,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 11, November- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जिन्होने 14 जनवरी 1515 इस्वी (विक्रम संवत् 1572) मकर संक्राति को ''बांसवाड़ा नगर'' बसाया। ''[5]

निष्कर्ष – भारत की जनजातियों में सर्वाधिक संख्या में निवास करने वाले भील आदिवासी है। भारत के प्राचीनतम धार्मिक ग्रंथ ऋषि वालमाकृत रामायण, वेदव्यास कृत महाभारत, बाणभट्ट कृत कादम्बरी, सोमदेव कृत कथासरित्सागर में आदिमवंशी भील का वर्णन वीर क्षत्रिय राजा, सैनिक और सच्चे सेवक के रूप में किया गया है। मेवाड़, वागड़ प्रदेश के भील बहुल क्षेत्रों–उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ, सिरोह और कुशलगढ़ रियासत शासको को भीलों द्वारा टीका अथवा राजतिलक किया जाता था यह इस बात का प्रतीक था की भील ही उस क्षेत्र के असली बाशिंदे है । वागड़ प्रदेश की भीली पहाडियों के मध्य बसा बांसवाड़ा नगर आज भी भील जनजाति के भील राजा बांसिया भील की ने नींव रखने के कारण ही बांसवाड़ा नगर ''बांसवाड़ा'' के नाम से पकारा जाता है

सन्दर्भ ग्रंथ सूची एवं पत्रिकाएं–

1. शर्मा, डॉ. ब्रजकिशोर , राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आंदोलन, 2011, पृष्ठ 6
2. ओझा गौरीशंकर हीराचन्द रू बांसवाड़ा का इतिहास 1936, पृष्ठ 12
3. पारगी, मनमोहन, बांसवाड़ा का राजा बांसिया भील (चरपोटा)
4. वडरा, रमेशचन्द्र सम्पादक, मानगढ संदेश पत्रिका बांसवाड़ा
5. प्रथम शिलालेख भीमकुण्ड चिबड़ातलाई गढ़ी बांसवाड़ा, 11 अप्रेल 2002
6. राजस्थान पत्रिका 9 अगस्त 2019